[Shri Gaya Chand Bhuyan]

Act. They are not following it because according to management anywhere in the country, it is not being followed. There also, the Management is supporting the labour union led by one person, Krushnachandra Swain who is a party man of the party in power in Orissa. So, Sir, the trouble arises there because he has less number of labour with him there (*Time bell rings*). One more minute Sir.

All the leaders of the union have been arrested and put inside the jail recently and they are not allowed bail. So, Sir, the first phase of the work is over. The second phase is going to start. The problem is that employment card is not issued to the labourers so that after the work they cannot demand a job on the strength of that card. I stress upon the Government and request the Government, through you, that this may be taken into consideration and an inquiry by CBI may be made in this thing and the question of giving work to contractors who are exploiting the labourers may be reconsidered.

REFERENCE TO THE NEGLECT OF TRADITIONAL ART IN JAIPUR

श्री प्रवीण कुमार प्रजापति (मध्य प्रदेश) : माननीय उपसभापति जी, मैं इस विशष उल्लेख के अन्तर्गत जिस विषय की ओर सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि वह हमारे देश की परम्परागत कला के संबंध में है।

श्रीमन्, पीतल पर नक्काशी और मीनाकारी के लिए मुरादाबाद और जयपुर की कला विश्व प्रसिद्ध है लेकिन बढ़ती हुई महंगाई और अधिकारियों की उपेक्षा के कारण हमारे देश की यह समृद्ध कला विलुप्त होती जा रही है।

10 मार्च, 1986 के नवभारत टाइम्स में एक समाचार प्रकाशित हुआ है जिसमें में कहा गया है कि पीढ़ी दर पीढ़ी इस कला को संजोए आ रहे करीब तीन सौ हुनरमंदों ने बाजार में माल की मांग कम होने देख अपने बच्चों को यह कला सिखना बन्द कर दिया है और खुद भी पेट की आग बुझाने के लिए ठेला या रिक्शा चलाने को मजदूर हो गए है।

श्रीमन्, ये कलाकार सुराही, फूलदान टेबिल लैम्प, शाल, ट्रे, शील्ड जैसी चीज़ों पर अपनी कलम से शिकार सवारी, जानवर और फूल पत्तियों के चित्र एवं डिजाइन इतनी खूबसूरती से बनाते हैं कि देखने वाला अचंभित रह जाता है। ये कलाकार यह काम दुकानदारों से मजदूरी का ठेका लेकर पूरा करते है। पैसे की कमी के कारण वे अपनी कलाकृतियों को खुद-बाजार में नहीं बेच पाते। इस कारण सारा मुनाफा व्यापारियों की जेब में चला जाता है। विदेशों में इन वस्तुओं की बहुत मांग है लेकिन स्थानीय मांग में पिछले पांच वर्षो में काफी कमी आई जिसके कारण व्यापारी इनका आसानी से शोषण कर लेते है। केन्द्र सरकार की नीति के अनुसार इनके विकास के लिए योजनाएं तो बनी हैं लेकिन इनका क्रियान्वयन नहीं है हो रहा है। इस कला के निरंतर ह्रास का कारण राजस्थान में बिक्री कर प्रणाली भी है। यहां मान्यवर विभिन्न प्वाइंट्स पर बिक्री कर लाने से कलाकृति का मुख्य मूल्य बढ़ जाता है और अन्य राज्यों के मुकाबले काफी महंगा हो जाता है। जयपुर हैंडीक्राफ्ट ऐसोसियेशन ने मांग की है कि इस प्रकार के बिक्री को समाप्त किया जाना चाहिए। यही स्थिति देश की अन्य पारंपरिक कलाओं की भी है। वे उचित प्रोत्साहन और आर्थिक सहायता के अभाव से विलुप्त होती जा रही है। मैं सरकार से अनुरोध करूंगा कि इन कलाकृतियों के संरक्षण के लिए विशेष प्रोत्साहन दिए जाएं और कलाकारों की जीविका की उचित व्यवस्था की जाए।